Ghost hunter

रात के 2:17 बजे दिल्ली के बाहरी इलाके में एक छोटा-सा ऑफिस बाहर से देखने पर बिल्कुल साधारण, लेकिन अंदर का माहौल अलग ही था। दीवारों पर अजीब-सी मशीनें, वायरिंग, EMF मीटर, कैमरे और एक बड़ा-सा बोर्ड जिस पर लिखा था—

“Ghost Hunters – Don’t Believe, only Verify.”

कमरे के अंदर तीन लोग बैठे थे

आरव – टीम लीडर, शांत दिमाग, कम बोलने वाला।
कबीर – टेक एक्सपर्ट, हर चीज़ को मजाक में लेने वाला।
मीरा – साइकिक, जो चीज़ें बाकी लोग महसूस भी नहीं कर सकते वो देख सकती थी।

टेबल पर रखे फोन की घंटी अचानक बज उठी।

Tring… Tring…

कबीर ने जम्हाई लेते हुए फोन उठाया—
“Ghost Hunters अगर भूत ने आपका वाई-फाई बंद कर दिया है तो हम नहीं आएंगे”

दूसरी तरफ से आवाज आई काँपती हुई—
“प्लीज मजाक मत कीजिए मेरी पत्नी वो वो अब इंसान नहीं रही”

कमरे में अचानक सन्नाटा छा गया।

आरव ने कबीर के हाथ से फोन ले लिया—“लोकेशन भेजिए और याद रखिए जब तक हम पहुंचें, आप उस कमरे में मत जाइए”

कॉल कट

मीरा धीरे से बोली— “वो अकेला नहीं है”

कबीर मुस्कुराया — “हाँ, उसकी पत्नी भी तो है।”

मीरा ने उसकी तरफ देखा — “नहीं कुछ और भी है वहाँ और वो बहुत पुराना है”

लोकेशन थीएक पुरानी कॉलोनी, शहर से थोड़ी दूर
गाड़ी में सन्नाटा था

कबीर ने माहौल हल्का करने की कोशिश की —
“यार, अगर ये फिर से बिल्ली निकली ना पिछली बार की तरह, तो मैं इस बार EMI नहीं भरूँगा।”

आरव ने बिना देखे जवाब दिया — “बिल्ली ने पिछले केस में तेरे हाथ पर 12 टांके लगवाए थे”

मीरा खिड़की से बाहर देख रही थी “ये केस बिल्ली वाला नहीं है”

घर पुराना था लेकिन बंद नहीं दरवाज़ा खुद-ब-खुद थोड़ा खुला हुआ था
जैसे कोई इंतज़ार कर रहा हो अंदर जाते ही ठंडी हवा का झोंका आया

कबीर ने तुरंत EMF मीटर ऑन किया — “ओके ये जगह नॉर्मल नहीं है सिग्नल स्पाइक कर रहा है”

आरव ने धीरे से कहा — “सब लोग अपने-अपने रोल में रहो। गलती की गुंजाइश नहीं है”

अचानक ऊपर से किसी के चलने की आवाज आई

ठक… ठक… ठक…
घर का मालिक राहुल नीचे ही बैठा था उसकी हालत खराब थी

“वो वो ऊपर है लेकिन वो मेरी पत्नी नहीं है अब ”

मीरा उसके पास बैठी — “पहली बार कब हुआ ?”
ज़्यादा जानें
राहुल — “तीन दिन पहले उसने खुद को कमरे में बंद कर लिया और फिर उसकी आवाज बदल गई”

कबीर धीरे से बोला — “क्लासिक पजेशन केस ”

मीरा ने सिर हिलाया — “नहीं ये पजेशन नहीं है ये कुछ और है ”

दरवाज़ा बंद था अंदर से धीमी-धीमी फुसफुसाहट आ रही थी

आरव ने इशारा किया — “कबीर कैमरा ”

कबीर ने नाइट-विजन कैमरा ऑन किया

मीरा ने आँखें बंद कीं और धीरे-धीरे बोली — “अंदर सिर्फ एक नहीं है ”

कबीर फुसफुसाया — “तू हर बार ये क्यों बोलती है ”

आरव ने दरवाज़ा खोला

क्रीईईक

कमरे के अंदर अंधेरा था और बीच में एक महिला बैठी थी उल्टे दिशा में मुड़ी हुई गर्दन के साथ

कबीर का हाथ कांप गया — “ये ये तो फिजिक्स के खिलाफ है ”

महिला धीरे-धीरे हँसने लगी — “तुम लोग फिर आ गए ”

आरव ने तुरंत टोन बदला — “हम मदद करने आए हैं ”

महिला की गर्दन धीरे-धीरे सीधी हुई लेकिन आँखें पूरी तरह काली थीं

“मदद?”
वो हँसी — “तुम लोग हमेशा यही कहते हो और फिर मर जाते हो”

अचानक कमरे का दरवाज़ा खुद बंद हो गया लाइट्स फड़कने लगीं EMF मीटर पूरी तरह रेड हो गया

कबीर — “ओके ये बहुत गलत हो रहा है”

महिला अचानक हवा में उठ गई।

मीरा चिल्लाई — “आरव! ये ह्यूमन स्पिरिट नहीं है!”

आरव— “तो फिर क्या है?!”

मीरा की आवाज काँप रही थी —
“ये ये किसी इंसान के अंदर रहने वाली चीज़ नहीं है ये कुछ और है”

अचानक महिला ने अपना सिर 360° घुमा लिया और सीधे कबीर की तरफ देखा

“तुम सबसे कमजोर हो”

कबीर — “Thanks ये तो मुझे पता था”

अगले ही पल वो हवा में उछलकर कबीर की तरफ आई

आरव ने तुरंत डिवाइस ऑन किया — “Containment Field!”

लेकिन मशीन ने काम नहीं किया स्क्रीन पर सिर्फ एक मैसेज आया
—“ERROR: ENTITY TOO STRONG”

मीरा की आँखों से खून की पतली धारा बहने लगी —

“ये ये हमें नहीं छोड़ेगा ”

महिला की आवाज गूँजी — “अब तुम भी यहीं रहोगे ”

और अचानक पूरा कमरा अंधेरे में डूब गया

कमरा पूरी तरह अंधेरे में डूब चुका था ना कोई आवाज ना कोई हलचल

सिर्फ एक चीज़ सुनाई दे रही थी —
किसी की साँसें जो तीनों में से किसी की भी नहीं थी

कबीर की आवाज सबसे पहले आई —
“अगर ये मजाक है तो मैं बता दूँ मुझे बिल्कुल मजाक पसंद नहीं है

कोई जवाब नही फिर अचानक उसकी जेब में रखा EMF मीटर खुद-ब-खुद ऑन हो गया

बीप … बीप … बीप ..

और अगले ही पल एक ठंडी फुसफुसाहट उसके कान के बिल्कुल पास —

“तुम सच में सबसे कमजोर हो ”

कबीर का गला सूख गया —
“आरव मीरा कोई है ?”

अंधेरे में, मीरा जमीन पर बैठी थी उसकी आँखों से खून की पतली धार अब भी बह रही थी लेकिन उसकी साँसें धीरे-धीरे स्थिर हो रही थीं।

उसने आँखें बंद कीं और फिर अचानक —
“ये जगह ये घर नहीं है ”

आरव— मतलब?

मीरा — हम अंदर फँस चुके हैं ये उसका बनाया हुआ स्पेस है

कबीर— ओके तो basically हम किसी भूत के WiFi में connected हैं?

मीरा ने तेज़ी से कहा— मजाक बंद कर! ये entity खुद का dimension बना सकती है

आरव ने जेब से एक छोटा-सा टॉर्च निकाला जैसे ही उसने ऑन किया रोशनी सिर्फ कुछ इंच तक ही गई फिर जैसे अंधेरा उसे निगल गया

आरव - ये नॉर्मल अंधेरा नहीं है

फिर उसने बैग से एक छोटा-सा metallic box निकाला—

Emergency Protocol

कबीर— ओह वो वाला जो तुमने कहा था ‘कभी यूज़ नहीं करना’?

आरव— हाँ क्योंकि अगर ये फेल हुआ तो हम सब खत्म

जैसे ही बॉक्स एक्टिव हुआ अचानक चारों तरफ अजीब-अजीब दृश्य बनने लगे

पुराने बहुत पुराने एक गाँव आग में जलता हुआ
लोग चिल्ला रहे थे और बीच में वही महिला लेकिन इस बार वो इंसान नहीं थी

उसकी आँखें काली और उसके आसपास परछाइयाँ

मीरा ने कांपते हुए कहा— ये.. ये उसका असली रूप है

कबीर— Great मतलब हमने VIP लेवल का भूत पकड़ लिया है

मीरा— ये भूत नहीं है

रुककर उसने धीरे से कहा— ये आत्मा नहीं एक शाप है

अचानक वो आवाज फिर गूँजी— मेरा नाम जानना चाहते हो?

आरव ने तुरंत चिल्लाया— कोई नाम मत लेना! इससे वो और मजबूत होगा

लेकिन देर हो चुकी थी

मीरा के मुँह से खुद-ब-खुद शब्द निकले— कालिका

कमरा एकदम से हिल गया दीवारें जैसे चीखने लगीं

कबीर— ओह ये नाम लेने का ही नहीं था क्या?

मीरा— मैंने नहीं कहा उसने मुझसे कहलवाया

अचानक अंधेरे से हाथ निकले लंबे काले जो कि इंसानी नहीं लग रहें थे उन्होंने कबीर को पकड़ लिया और हवा में उठा दिया

कबीर— आरव!! मैं उड़ नहीं सकता भाई!!

आरव ने तुरंत डिवाइस एक्टिव किया— Light Pulse!

एक तेज़ सफेद रोशनी पूरे कमरे में फैली और पहली बार वो चीज़ साफ दिखी वो महिला नहीं थी उसका शरीर टूटा हुआ कई जगह से मुड़ा हुआ और उसके पीछे दर्जनों परछाइयाँ जुड़ी हुई थीं जैसे वो अकेली नहीं, एक झुंड हो

मीरा चीखी— ये एक entity नहीं है ये कई आत्माओं का जुड़ा हुआ शाप है!

आरव— मतलब हम एक से नहीं… पूरे कलेक्शन से लड़ रहे हैं…”

कबीर (हवा में लटके हुए)— भाई next time single piece वाला केस लेना

अचानक उन परछाइयों में से एक अलग हुई और सीधे मीरा की तरफ आई मीरा की आँखें पूरी काली हो गईं

वो धीरे से बोली— ये… मुझे बुला रहा है

आरव— मीरा! खुद को कंट्रोल कर!

लेकिन मीरा के पैर खुद-ब-खुद उस entity की तरफ बढ़ने लगे

कबीर चिल्लाया— कुछ करो! वरना ये permanent member बन जाएगी!

आरव ने आखिरी option निकाला—

एक छोटा-सा ब्लेड जिस पर अजीब symbols बने थे
उसने खुद के हाथ पर कट लगाया खून टपका और उसने फर्श पर एक circle बनाना शुरू किया

“अगर ये काम नहीं किया तो हम सब यहीं खत्म”

entity जोर से हँसी— “तुम इंसान हमेशा सोचते हो कि तुम कंट्रोल में हो”

मीरा अब बिल्कुल उसके सामने खड़ी थी

और उसकी आवाज बदल चुकी थी— “अब ये मेरा है”

आरव चिल्लाया— मीरा!!!

और जैसे ही उसने circle पूरा किया अचानक सब कुछ रुक गया

कमरा बिल्कुल स्थिर हो चुका था जैसे समय खुद रुक गया हो कबीर अब भी हवा में लटका हुआ था लेकिन उसका शरीर freeze हो गया था मीरा उस entity के सामने खड़ी थी आँखें पूरी तरह काली और आरव खून से बना हुआ circle पूरा कर चुका था

अचानक एक क्रैक की आवाज आई जैसे काँच टूटता है
और अगले ही पल सब कुछ फिर से चलने लगा

कबीर जोर से जमीन पर गिरता है
“आह्ह !! भाई , अगली बार मुझे पहले बता देना मैं खुद ही कूद जाता ”

लेकिन आरव का ध्यान कहीं और था वो मीरा को देख रहा था जो अब धीरे-धीरे उस entity के अंदर समा रही थी

आरव चिल्लाया — कबीर ! Bag में से Phase Anchor निकाल !

कबीर उठते हुए — हाँ बस मेरी रीढ़ की हड्डी वापस जगह पर आ जाए पहले

फिर उसने जल्दी से device निकाला — ये लो !

आरव ने उसे पकड़कर ground में fix किया और Click

Device एक्टिव होते ही कमरे के बीच में एक faint blue light बनने लगी
मीरा अचानक रुक गई

entity की आवाज गूँजी — तुम मुझे रोक नहीं सकतें

आरव ने गहरी सांस ली — हम तुझे रोकने नहीं तोड़ने आए हैं

उसने एक छोटी-सी metal plate निकाली जिस पर पुराने symbols बने थे

कबीर ने frequency 7.3 पर सेट किया

कबीर — Done लेकिन ये वही है ना जो पिछली बार explode हुआ था ?

आरव— बस इस बार हमें भी साथ में ना उड़ा दे

मीरा का शरीर कांपने लगा उसकी आवाज दो हिस्सों में बंट गई एक उसकी अपनी और एक उस entity की--

“आरव… भाग जाओ…”

“कोई कहीं नहीं जाएगा …”

मीरा की आँखों से आँसू और खून साथ बहने लगे।

“ये … मुझे खींच रहा है … मैं … मैं रुक नहीं पा रही …”

आरव ने दाँत भींचे — तू रुकेगी। मैं हूँ यहाँ।

कबीर ने machine ऑन की— Vrrrrrrrrrrrr…

एक तेज़ vibration पूरे कमरे में फैल गया दीवारों पर cracks आने लगे

entity चीखी — ये आवाज बंद करो !!!

कबीर — ओह! इसे DJ नहीं पसंद !

लेकिन अगले ही पल एक काली परछाई तेजी से कबीर की तरफ आई और उसे दीवार से दे मारा

धड़ाम !

कबीर — आई लाला आआहह, ओके DJ joke वापस लेता हूँ

आरव ने मीरा की तरफ कदम बढ़ाए लेकिन जैसे ही वो circle के बाहर गया उसके पैर जैसे जमीन में धंस गए

entity हँसी — ये रेखा तुम्हें बचा रही थी अब तुम मेरे हो

आरव ने struggle किया लेकिन वो फँस चुका था

मीरा चिल्लाई— नहीं!! आरव वापस जाओ!!

कबीर ने खून खांसते हुए machine को फिर से adjust किया— आरव! अगर इसे peak पर ले जाएँ तो शायद ये टूट जाए

आरव— और हम?

कबीर— हम शायद नहीं बचेंगे

थोड़ी देर के लिए सन्नाटा

फिर आरव ने धीरे से कहा—कर दे

कबीर ने किसी सनकी पागल की तरह हंसते हुए trembling हाथों से dial घुमाया— 7.3 → 8.5 → 10.0

Machine जोर से गूंजने लगी कमरा हिलने लगा

entity चीखने लगी— तुम समझते नहीं हो!! मैं खत्म नहीं हो सकती!!

मीरा जमीन पर गिर गई उसका शरीर झटके खाने लगा।

आरव चिल्लाया— मीरा! Focus! इसे बाहर निकालो!!

मीरा ने पूरी ताकत लगाई "ये मेरे अंदर नहीं रहेगा!!”

अचानक एक तेज़ सफेद रोशनी पूरे कमरे में फैली
entity का शरीर टूटने लगा उसके पीछे जुड़ी हुई परछाइयाँ एक-एक करके अलग होने लगीं और जोर-जोर से चीखने लगीं

कबीर— ये काम कर रहा है!!!

लेकिन तभी Machine पर warning आई— “OVERLOAD” ⚠

आरव ने देखा— अगर machine explode हुई तो पूरा घर और वो तीनों खत्म मीरा अब बेहोश थी
entity आधी टूट चुकी थी लेकिन अभी भी जिंदा थी

कबीर चिल्लाया— आरव!! अब क्या?!

आरव ने decision लिया उसने machine की तरफ दौड़ लगाई और जोर से चिल्लाया - अगर इसे बंद किया तो ये वापस आ जाएगी अगर नहीं किया तो हम मर जाएंगे

कबीर— तो plan क्या है?!

आरव ने बिना पीछे देखे कहा— आज हम gamble खेलेंगे
और उसने machine को पूरी ताकत से तोड़ दिया..…

धीरे-धीरे आवाज़ें वापस आने लगीं पहले एक हल्की सीटी जैसी गूंज फिर टूटती लकड़ियों की आवाज और फिर—किसी के खांसने की

कबीर ने आँखें खोलीं चारों तरफ धुआँ था दीवारें आधी टूट चुकी थीं

“अगर ये स्वर्ग है तो maintenance बहुत खराब है”

उसने उठने की कोशिश की—“आह… नहीं ये definitely स्वर्ग नहीं है”

थोड़ा आगे उसे आरव दिखा वो जमीन पर पड़ा था… बिल्कुल हिल नहीं रहा था।

कबीर घबराया—“आरव! ओए उठ! 😭 आरव तुम हमें ऐसे छोड़ कर नहीं जा सकते”

कबीर ने उसका pulse check किया धीमा लेकिन था “ठीक है तू अभी मरा नहीं है लेकिन अगर जल्दी नहीं उठा तो मैं तुझे खुद मार दूंगा ”

उसने राहत की सांस ली लेकिन तभी उसे याद आयी मीरा की

कमरा अब खाली था वो entity गायब थी साथ में मीरा भी

सिर्फ एक चीज़ बची थी फर्श पर जला हुआ circle और उसके बीच में एक अजीब -सा निशान जैसे किसी ने अंदर से बाहर निकलने की कोशिश की हो

कबीर धीरे से बोला —“ये अच्छा sign नहीं है ”

कुछ मिनट बाद आरव होश में आया उसने तुरंत पूछा “मीरा कहाँ है ?”

कबीर —अगर मुझे पता होता तो मैं यहाँ खड़ा नहीं होता

आरव उठते □□□—“entity?”

□□□□—Gone या शायद upgraded version में चली गई

दोनों कुछ सेकंड चुप रहे फिर आरव ने कहा —हमें राहुल को check करना होगा

नीचे हॉल में राहुल अब भी उसी कुर्सी पर बैठा था लेकिन इस बार कुछ अलग था वो हिल भी नहीं रहा था

कबीर धीरे से पास गया — भाई अगर तू prank कर रहा है ना तो बता दूँ ये बहुत बुरा prank है

कोई जवाब नही आरव ने उसकी आँखों के सामने हाथ हिलाया कोई reaction नहीं फिर उसने उसकी गर्दन देखीएक काला निशान जैसे किसी ने अंदर से पकड़कर दबाया हो

अचानक राहुल का सिर धीरे -धीरे ऊपर उठा उसकी आँखें खुलीं पूरी तरह काली

कबीर पीछे हट गया — ओह ये तो हमने सोचा ही नहीं

राहुल की आवाज आई — तुमने सोचा ये खत्म हो गया ?

आरव का चेहरा सख्त हो गया —नहीं मैंने सोचा ये बस शुरू हुआ है

राहुल हँसा लेकिन वो हँसी उसकी नहीं थी

“तुमने मेरे एक हिस्से को तोड़ा लेकिन अब आज़ाद हैं ”

कबीर —मतलब… ये DLC pack में आया है क्या ?

आरव ने उसे चुप कराया— “कितने हैं?”
राहुल की मुस्कान और चौड़ी हो गई— तुम गिन नहीं पाओगे
अचानक— ऊपर से एक हल्की-सी आवाज आई
जैसे कोई धीरे-धीरे चल रहा हो।
ठक… ठक…
कबीर—ये मीरा हो सकती है
आरव—या कुछ और
लेकिन तभी सीढ़ियों पर खून की एक पतली लकीर दिखी ताजा ऊपर की तरफ जाती हुई
आरव ने flashlight उठाई - हमें ऊपर जाना होगा
कबीर—हाँ… क्योंकि obviously हमने अभी तक काफी danger नहीं देखा दोनों धीरे-धीरे सीढ़ियाँ चढ़ने लगे पीछे राहुल अब भी बैठा था लेकिन उसकी मुस्कान अब और भी बड़ी हो चुकी थी
जैसे ही आरव और कबीर ऊपर पहुँचे दरवाज़ा अपने-आप बंद हो गया
अंदर दीवारों पर खून से कुछ लिखा था—
“ONE LEFT”
कबीर ने फुसफुसाया—“एक… क्या?”
तभी तभी से एक आवाज आई बहुत धीमी बहुत जानी-पहचानी “आरव…”
वो मीरा की आवाज थी लेकिन उसमें कुछ अलग लग रही थी
आरव ने धीरे से कहा—मीरा…?
और तभी flashlight blink हुईऔर एक सेकंड के लिए उनके सामने खड़ी आकृति दिखी आधा चेहरा मीरा का और आधा कुछ और

कमरे में सन्नाटा नहीं था वो साँस ले रहा था दीवारें फर्श हवा
सब कुछ जैसे जिंदा हो आरव और कबीर दरवाज़े के अंदर खड़े थे

उनके सामने मीरा या जो भी अब मीरा थी

[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible] suggest [illegible]... [illegible] politely exit [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

“[illegible] option [illegible] [illegible]”

[illegible] ONE LEFT

[illegible] already [illegible]

[illegible]-[illegible]... one left

[illegible]

[illegible] (entity [illegible])— [illegible] useful [illegible]

[illegible]... [illegible] reject [illegible], [illegible]

[illegible]

[illegible]?

[illegible] trap [illegible]

आरव ने धीरे-धीरे अपने बैग से एक छोटा device निकाला

कबीर की आँखें फैल गईं— ये ये तो हमने use ही नहीं किया कभी

आरव— क्योंकि ये incomplete था

कबीर— और अब complete हो गया?

आरव😏— नहीं लेकिन हमारे पास option भी नहीं है

मीरा जमीन पर गिर गई उसका शरीर uncontrollably कांप रहा था

मीरा - आरव प्लीज मुझे मत छोड़ना

आरव की आवाज नरम हुई— मैं यहाँ हूँ

entity चीखी— ये अब तुम्हारी नहीं है!!

मीरा अचानक उठी और तेज़ी से आरव की तरफ दौड़ी

कबीर चिल्लाया- अबे कुछ कर!!

आरव ने device ऑन किया— Click.

एक circular pulse निकली और जैसे ही मीरा उस दायरे में आई वो हवा में freeze हो गई आधा उसका चेहरा दर्द में था आधा गुस्से में

entity की आवाज गूँजी— तुम सोचते हो ये trap है?

आरव— नहीं ये test है तू bodies बदलता है… लेकिन rules follow करता है

कबीर— ओह मतलब ये भी सरकारी सिस्टम जैसा है?

आरव— इसे survive करने के लिए एक anchor चाहिए और अभी के लिए वो मीरा है

कबीर को समझ आ गया उसने धीरे से कहा
“मतलब अगर anchor खत्म”

आरव— तो ये भी खत्म

कबीर— और मीरा?

सन्नाटा मीरा की आँखों से आँसू बह रहे थे— कर दो

आरव— मैं नहीं कर सकता

मीरा— अगर तुमने नहीं किया तो ये तुम्हें ले लेगा फिर और लोगों को मैं already जा चुकी हूँ

entity हँसी— देखा? इंसान खुद ही surrender कर देता है

आरव के हाथ में वो blade था जिससे ritual शुरू हुआ था उसके सामने मीरा जो अब भी लड़ रही थी।

पीछे— कबीर जो कुछ नहीं कर पा रहा था

और चारों तरफ वो अंधेरा जो इंतज़ार कर रहा था आरव ने धीरे-धीरे blade उठाया उसकी आँखों में आँसू थे

“अगर यही रास्ता है”

मीरा ने आँखें बंद कर लीं— जल्दी करो

और जैसे ही आरव ने वार करने के लिए हाथ आगे बढ़ाया

अचानक…

कबीर चिल्लाया— रुक!!!

रुक!!! कबीर की आवाज कमरे में गूँज गई आरव का हाथ हवा में ही रुक गया blade बस कुछ इंच दूर था

कबीर अचानक बनावटी दुखी चेहरा बनाकर आगे बढ़ा—
“रुक जा आरव मुझे मीरा से आखिरी बार कुछ बात करनी है”

आरव गुस्से में— कबीर! ये मजाक का टाइम नहीं है!

लेकिन कबीर उसकी बात ignore करके मीरा के सामने खड़ा हो गया

कबीर ने गहरी साँस ली और बोलना शुरू किया— बेचारी का ये हाल देखा नहीं जा रहा है वैसे तो ये पहले भी खड़ुस थी लेकिन जैसे भी थी हमारी साथी थी।

मीरा का इंसानी हिस्सा हलका-सा react हुआ entity चुप थी… जैसे observe कर रही हो

कबीर जारी रहा— हर वक्त सड़ी हुई शक्ल बनाकर घूमती रहती थी,और तेरे जाने के बाद इतना सारा खाना कौन खाएगा? अकेले ही पुरा महिने का राशन खा जाती थी, अब कौन खाएगा😭

आरव— ये क्या कर रहा है

कबीर— अरे भाई, emotional moment है disturb मत कर

फिर वो थोड़ा और करीब आया— और बेचारी एक boyfriend भी नहीं बना सकी, बनाती भी कैसे तेरी शक्ल देखकर ही लड़के भाग जाते थे

अचानक कमरे में पूरी शांति छा गई

आरव… freeze।

मीरा… freeze।

और वो entity वो भी चुप हो गई जैसे कुछ समझने की कोशिश कर रही हो।

कबीर ऊपर से बकवास कर रहा था लेकिन अंदर ही अंदर नहीं क्योंकि उसके होंठ बहुत हल्के-हल्के हिल रहे थे

मंत्रोच्चारण, धीमा steady बिना आवाज के उसकी उंगलियाँ धीरे-धीरे पीछे की तरफ गईं बैग के अंदर और उसने एक छोटी-सी bottle पकड़ ली

एक सेकंड बस एक सही मौका entity का ध्यान थोड़ा सा ही हटा
और उसी पल

छपाक!! कबीर ने पूरी bottle मीरा के ऊपर फेंक दी

जैसे ही वो liquid मीरा के शरीर पर गिरा— एक जोरदार चीख पूरे कमरे में गूँज गई

“AAAAAAAHHHHH!!!”

मीरा जमीन पर गिर गई उसका शरीर बुरी तरह कांपने लगा entity की आवाज बदल गई- ये क्या है… ये क्या किया तुमने!!!

कबीर पीछे हटते हुए—Welcome to India… ये है गंगा जल 😏

जहाँ-जहाँ वो पानी गिरा था वहाँ से धुआँ उठने लगा मीरा के शरीर से काली परछाइयाँ अलग होने लगीं जैसे कोई जल रहा हो

आरव की आँखें चौड़ी हो गईं—तू… तू ये साथ लेकर आया था?

कबीर— भाई तू scientist है तो मैं भी किस फैमिली से हूँ याद है न basic cheezein साथ रखता हूँ 😌

entity अब पूरी तरह unstable हो चुकी थी — तुम मुझे ऐसे नहीं रोक सकते मैं मैं

उसकी आवाज टूटने लगी

मीरा की अपनी आवाज वापस आई — आरव अभी अभी मौका है

आरव तुरंत समझ गया उसने blade पर पकड़ मजबूत की

लेकिन इस बार उसका target मीरा नहीं था उसने जमीन पर एक नया symbol बनाना शुरू किया तेजी से बिना रुके

कबीर — ओह अब समझ आया तू क्या कर रहा है

अचानक entity हँसी - तुम सोचते हो … ये जीत है ?

मीरा का चेहरा फिर से बदलने लगा — तुमने मुझे चोट पहुँचाई है लेकिन खत्म नहीं किया

कमरे की दीवारें फिर से हिलने लगीं आरव ने आखिरी line पूरी की symbol activate होने वाला था

मीरा बीच में थी entity आधी बाहर आधी अंदर

कबीर चिल्लाया — जल्दी कर !!! ये ज्यादा देर नहीं टिकेगा !!
आरव ने हाथ उठाया

लेकिन तभी मीरा ने उसकी तरफ देखा और धीरे से कहा

“अगर ये गलत हुआ तो मैं नहीं बचूँगी ”

आरव की आँखें एक सेकंड के लिए हिल गईं और उसी पल
entity ने control वापस लेना शुरू किया

कमरा काँप रहा था दीवारों की दरारें बढ़ती जा रही थीं मीरा बीच में खड़ी थी आधी इंसान आधी अंधेरा आरव का हाथ हवा में रुका हुआ था बस एक activation बाकी था

कबीर - जल्दी कर आरव! ये ज्यादा देर hold नहीं करेगा!

आरव - अगर मैंने अभी activate किया तो मीरा भी trap में आ जाएगी

मीरा (कमजोर आवाज में) - करो मेरे बारे में मत सोचो

entity (हँसते हुए) - देखो इंसान खुद ही अपना फैसला आसान कर देता है

आरव की आँखें तेजी से चारों तरफ घूमीं दीवारें symbol गंगा जल के निशान और फिर उसकी नजर मीरा के पैरों पर गई जहाँ गंगा जल गिरा था वहाँ एक छोटा सा साफ दायरा बन गया था बाकी जगह अंधेरा था

आरव - कबीर! गंगा जल बचा है?

कबीर - थोड़ी सी क्यों?

आरव - मुझे 5 सेकंड चाहिए बस 5!

कबीर - भाई यहाँ EMI नहीं चल रही 5 सेकंड बहुत होते हैं!

आरव अचानक आगे बढ़ा entity गरजी

“तुम फिर गलती कर रहे हो!!”

मीरा का शरीर झटका खा रहा था आरव ने lightning speed में मीरा के चारों तरफ circle पूरा किया —

लेकिन इस बार खून नहीं गंगा जल से कबीर समझ गया

कबीर - ओह तू dual trap बना रहा है

आरव - Exactly.

entity चीखी — नहीं !!!

आरव ने जोर से हाथ नीचे मारा — Activate!

जमीन पर बना खून वाला symbol चमका और गंगा जल वाला circle भी activate हो गया दोनों के बीच मीरा खड़ी थी

कबीर (तेजी से बोलते हुए) - ये … ये उसे split कर रहा है !

आरव - हाँ entity को अंदर और बाहर दोनों जगह एक साथ नहीं रहने देगा

मीरा चीखी उसके शरीर से काली परछाइयाँ जबरदस्ती बाहर खींची जाने लगीं।

entity चिल्लाई — तुम मुझे बाँट नहीं सकते !!!

आरव - मैं तुझे बाँट नहीं रहा मैं तुझे अलग कर रहा हूँ।

एक तरफ मीरा गिरती हुई कमजोर।

दूसरी तरफ — काली entity जो बाहर निकलने की कोशिश कर रही थी

लेकिन गंगा जल का circle उसे जला रहा था

अचानक— खून वाला symbol flicker करने लगा।

कबीर - ओह नहीं ये unstable हो रहा है !

आरव - hold करो इसे !

कबीर - मैं engineer हूँ भगवान नहीं !!

मीरा ने आखिरी ताकत से कहा

मीरा - आरव अभी अभी खत्म करो

आरव ने दाँत भींचे — उसने दोनों circles के बीच हाथ रखा

सीधे उस अंधेरे के अंदर।

कबीर - पागल हो गया है क्या !!!

आरव चिल्लाया — निकलजाआआ!!!

और जोर से हाथ झटका एक तेज़ रोशनी ने पुरे कमरे को घेर लिया साथ ही
कानों को फाड़ देने वाली चीख और फिर
सब शांत मीरा जमीन पर गिरी हुई थी पूरी तरह normal उसकी आँखें वापस
पहले जैसी हो गई उसकी साँसें steady

कबीर धीरे से बोला

कबीर - ये … सच में हो गया ?

आरव चुप था वो सामने देख रहा था

जहाँ entity थी वहाँ अब कुछ नहीं था सिर्फ एक काला धब्बा … जो धीरे-धीरे दीवार में समा रहा था

कबीर - ये … भाग गया ?

आरव धीरे से - नहीं , ये ... shift हुआ है

तभी नीचे से आवाज आई राहुल की लेकिन इस बार

उसकी आवाज और गहरी थी

राहुल - अब सच में one left

कबीर - भाई ये level अभी खत्म नहीं हुआ □

आरव ने मीरा की तरफ देखा

फिर नीचे की तरफ

आरव - नहीं ये अभी शुरू हुआ है।

सीढ़ियों के नीचे से आती आवाज अब साफ थी धीमी , भारी और इस बार एक नहीं कई कमरे की हवा फिर से ठंडी हो गई मीरा मुश्किल से उठी अभी भी कमजोर थी

मीरा - वो वापस आ गया है लेकिन इस बार अकेला नहीं है

कबीर - हाँ , मुझे भी feel आ रहा है जैसे free में family pack मिल गया हो

आरव की नजर दरवाज़े पर थी

आरव - हम तीनों ये अकेले handle नहीं कर पाएंगे

कबीर - finally... तूने मान लिया

आरव ने जेब से एक पुराना -सा device निकाला उस पर एक ही बटन था कबीर ने देखा और उसका चेहरा serious हो गया

कबीर - तू ये use करेगा ?

आरव - कोई option नहीं है

मीरा (धीरे से) - ये वही है ना ?

आरव - हाँ Emergency Backup।

कबीर - भाई पिछली बार जब ये use हुआ था आधा building उड़ गया था

आरव - इस बार हम कोशिश करेंगे पूरा ना उड़े।

कबीर - great confidence full है 😑

आरव ने बटन दबाया Beep

कुछ सेकंड कुछ नहीं हुआ फिर device पर एक लाल light blink होने लगी और एक robotic आवाज आई

“Backup Team Activated. ETA: 7 minutes.”

कबीर - 7 मिनट ? भाई … हमारे पास 7 सेकंड भी नहीं हैं !

जैसे ही उसने ये कहा नीचे से दरवाज़ा जोर से खुला
धड़ाम !!

सीढ़ियों के नीचे राहुल खड़ा था लेकिन अब वो इंसान जैसा नहीं दिख रहा था उसका शरीर टेढ़ा-मेढ़ा आँखें काली और उसके पीछे परछाइयाँ जो हिल रही थीं

राहुल (गहरी आवाज में) - तुमने सोचा तुम जीत गए ?

आरव - नहीं ... मैंने सोचा तू upgrade होकर आएगा

कबीर - और तू expectations पर खरा उतरा □

मीरा की आँखें फिर से हल्की चमकी —

मीरा - ये ये अब एक नहीं है

“कम से कम… पाँच ”

कबीर - पाँच ?! भाई ये PUBG squad है क्या ?!

अचानक—

राहुल के पीछे की परछाइयाँ अलग हुईं और सीढ़ियों पर चढ़ने लगीं तेजी से अमानवीय तरीके से

आरव - positions लो !

कबीर ने तुरंत अपने gadgets निकाले —

कबीर - मेरे पास बस दो charges बचे हैं !

आरव - तो miss मत करना

एक shadow सीधा कबीर की तरफ आई —

उसने device फेंका —

Flash!

वो परछाई चीखते हुए पीछे हटी।

कबीर - एक down! चार बाकी !

मीरा आगे बढ़ी —

मीरा - मैं इन्हें feel कर सकती हूँ मैं guide करूँगी

आरव - नहीं ! तू अभी कमजोर है !

मीरा - अगर मैं नहीं करूँगी … तो हम सब मरेंगे।
-

मीरा ने आँखें बंद कीं —

“Left!”

आरव ने तुरंत attack किया —

एक और shadow पीछे हटी।

कबीर - ओहो! live GPS मिल गया !

device की आवाज—

“ETA: 3 minutes.”

कबीर - बस 3 मिनट और survive करना है

आरव - बोलने में आसान है।

राहुल धीरे-धीरे ऊपर आ रहा था हर कदम के साथ
दीवारें crack हो रही थीं

राहुल - तुम जितना fight करोगे उतना दर्द होगा

अचानक—

एक shadow मीरा के पीछे से आई …

और उसे पकड़ लिया।

मीरा चीखी —

आरव - मीरा !!!

कबीर - ओह नहीं !!

मीरा हवा में उठ गई उसकी आँखें फिर से काली होने लगीं।
राहुल मुस्कुराया

राहुल - एक वापस बाकी भी आ जाएँगे

device फिर बोला —

“ETA: 1 minute.”

कबीर घबराया —

कबीर - आरव!! एक मिनट !!

आरव ने मुट्ठी भींच ली उसकी नजर राहुल पर थी और मीरा हवा में।

आरव (धीरे , लेकिन खतरनाक आवाज में) - एक मिनट काफी होता है

कमरे की हालत अब पहले से भी खराब थी दीवारें टूट रही थीं हवा भारी थी
और बीच में मीरा हवा में लटकी हुई उसकी आँखें फिर से काली हो रही थीं

device की आवाज—

“ETA: 60 seconds.”

कबीर - भाई ये 60 सेकंड PUBG के 60 सेकंड जैसे क्यों लग रहे हैं?!

आरव - focus!

राहुल अब सीढ़ियों के आखिरी स्टेप पर था उसके पीछे बाकी shadows जैसे उसके आदेश का इंतज़ार कर रही हों

राहुल - तुम लोग समझ क्यों नहीं रहे ये लड़ाई तुम्हारी है ही नहीं

कबीर - हाँ EMI भी हमारी नहीं है फिर भी भरते हैं 😑

आरव ने अचानक blade उठाया और खुद के हाथ पर गहरा कट लगा दिया खून जमीन पर गिरने लगा

कबीर - ओए! तू खुद को क्यों काट रहा है?!

आरव - इसे attract करने के लिए

खून जमीन पर गिरते ही एक faint pattern बनने लगा मीरा के नीचे

कबीर समझ गया—

कबीर - ओह तू इसे नीचे खींचेगा!

आरव - हाँ… force separation।

लेकिन जैसे ही pattern बना मीरा जोर से चीखी उसका शरीर और ऊपर उठ गया

entity हँसी— तुम अब भी सीख नहीं पाए

“ETA: 10 seconds.”

कबीर - अगर ये time पर नहीं आए ना मैं complaint लिखूँगा!

[illegible]

BOOM!!

[illegible]
[illegible] geared up

[illegible] suits advanced devices focused [illegible]

[illegible] calm [illegible] situation [illegible]
[illegible] scan [illegible]

[illegible] time waste [illegible]

[illegible] - Freeze pattern, [illegible]!

[illegible] device [illegible]

Pulse!

[illegible]

[illegible] - [illegible]

[illegible]

[illegible] - Special Response Unit

[illegible]

[illegible] - Host unstable [illegible] core [illegible]

राहुल हँसा —

राहुल - तुम देर से आए

लीडर - हम कभी देर से नहीं आते बस लोग पहले मर जाते हैं

बाकी दो members shadows से भिड़ गए एक ने electric net फेंका दूसरे ने sonic pulse छोड़ा
दो shadows instantly disintegrate हो गईं

कबीर - भाई ये लोग तो pro max हैं

लीडर ने आरव की तरफ देखा

लीडर - तुम team lead हो ?

आरव - हाँ

लीडर - तो सुनो … तुम्हारी friend के अंदर अभी भी core link है

“अगर हमने गलत move किया तो वो नहीं बचेगी ”

कबीर - तो सही move क्या है ?

लीडर ने सीधा जवाब दिया —

लीडर - उसे गिरने दो

आरव - क्या ?!

लीडर - gravity break करेगी connection
“लेकिन impact उसे मार भी सकता है ”

मीरा अब ceiling के पास थी उसकी आँखें पूरी काली
entity control लेने ही वाली थी नीचे आरव खड़ा था

उसके पास choice थी उसे पकड़ने की कोशिश करे (risk: possession complete) या उसे गिरने दे (risk: death)

कबीर धीरे से —

कबीर - भाई decide कर

लीडर की आवाज —

लीडर - 3... 2...

आरव की आँखें मीरा पर थीं —

और उसने धीरे से कहा —

आरव - trust me...
कमरा जैसे सांस रोककर खड़ा था मीरा छत के बिल्कुल पास थी उसका शरीर कांप रहा था आँखें पूरी काली।

नीचे आरव उसकी तरफ देख रहा था।

लीडर - 3

कबीर - भाई जल्दी decide कर!

लीडर - 2...

मीरा (टूटी हुई आवाज में) - आरव...

लीडर - 1—

आरव - अब!

अचानक, मीरा का शरीर हवा से छूटा और वो तेजी से नीचे गिरने लगी।

कबीर - ओए!!!

लेकिन गिरने से एक सेकंड पहले आरव ने अपनी जगह नहीं छोड़ी बल्कि उसने जमीन पर बना अपना खून वाला symbol activate किया

मीरा जमीन से टकराने ही वाली थी कि अचानक symbol से एक faint red energy निकली और उसके गिरने की speed कम हो गई मीरा जोर से जमीन पर गिरी लेकिन मरने लायक नहीं

जैसे ही वो गिरी उसके शरीर से एक काली energy झटके से बाहर निकली और पीछे हट गई

entity चीखी— तुमने connection तोड़ दिया!!!

कबीर समझ गया

कबीर - ओह तू उसे गिरने दे रहा था लेकिन full impact नहीं होने दिया!

आरव - gravity shock without death।

लीडर ने मौका देखा—

लीडर - अभी! Core बाहर है!

बाकी team members तुरंत action में आए एक ने energy net फेंका दूसरे ने sonic spike activate किया entity बीच में फँस गई

वो छटपटाने लगी - मैं खत्म नहीं हो सकती!!

आरव - कबीर! frequency!

कबीर - max पर जा रहा हूँ!

लीडर - stabilize field!

तीनों की powers एक साथ activate हुईं

Light… sound… energy…

सब कुछ एक point पर converge हुआ।

एक तेज़ flash और फिर शांति। कमरा अब शांत था कोई shadow नहीं कोई आवाज नहीं मीरा जमीन पर पड़ी थी
साँस ले रही थी

कबीर - ये हो गया?

आरव ने धीरे से कहा

आरव - शायद…

लीडर अभी भी alert थी वो उस जगह को देख रही थी जहाँ entity थी।

लीडर - कुछ ठीक नहीं है

अचानक— दीवार पर वो काला धब्बा फिर से हिलने लगा।

धीरे-धीरे उसका shape बनने लगा।

मीरा (कमजोर आवाज में) - ये… खत्म नहीं हुआ…

कबीर - फिर से?!

लीडर ने गहरी आवाज में कहा—

लीडर - ये… एक entity नहीं है ये एक network है

दीवार पर काला shape अब पूरी तरह बन चुका था लेकिन इस बार वो राहुल जैसा नहीं था

ना ही मीरा जैसा कुछ और उसने धीरे से कहा

“तुमने… सिर्फ दरवाज़ा बंद किया है”

“हम… बाहर हैं”

आरव की आँखें सख्त हो गईं

आरव - तो अब हम बाहर आएँगे।

कमरे में अब कोई चीख नहीं थी बस टूटी दीवारें जला हुआ फर्श और हवा में हल्की-सी जली हुई गंध दीवार पर बना काला आकार धीरे-धीरे स्थिर हो चुका था

लीडर ने बिना समय गंवाए आदेश दिया—

लीडर - perimeter seal. अभी।

दोनों backup members तुरंत फैल गए एक ने दरवाज़े पर device लगाया दूसरे ने खिड़कियों पर छोटे-छोटे nodes fix कर दिए।

टिक… टिक… टिक…

कमरे के चारों तरफ एक invisible barrier activate हो गया

आरव - ये क्या कर रहे हो?

लीडर - containment. जब तक source identify नहीं होता ये यहीं रहेगा

कबीर - मतलब ये भाग नहीं सकता?

लीडर - अगर तुम लोग बीच में कुछ उल्टा नहीं करोगे तो नहीं।

दीवार पर बना काला shape अब बस हल्का-सा हिल रहा था ना हमला ना आवाज

मीरा धीरे से उठी

मीरा - ये देख रहा है

लीडर - हाँ ये active नहीं है ये linked है

दूसरा member आगे आया उसने एक tablet जैसा device निकाला और scan शुरू किया

कुछ सेकंड बाद वो सीधा बोला

मेंबर - multiple residual signatures. primary core present नहीं है।

कबीर - हिंदी में?

मेंबर - असली चीज़ यहाँ नहीं है

आरव ने सिर हिलाया—

आरव - तो ये बस gateway है

लीडर - हाँ और तुम लोगों ने इसे unstable कर दिया है

कबीर - तो अब? इसे तोड़ देते हैं?

लीडर ने सीधा जवाब दिया

लीडर - नहीं इसे बंद करते हैं

तीनों backup members एक pattern में खड़े हो गए उनके devices sync होने लगे

बीप… बीप…

लीडर ने short command दी

लीडर - phase lock.

फर्श पर faint blue lines बनने लगीं दीवार का काला shape हल्का-सा resist करने लगा लेकिन कोई बड़ा reaction नहीं

आरव ध्यान से देख रहा था—

आरव - तुम लोग इसे destroy क्यों नहीं कर रहे?

लीडर - क्योंकि ये network है एक node तोड़ोगे… बाकी activate हो जाएँगे

लीडर ने आखिरी command दी

लीडर - close it.

एक Click. एक sharp pulse पूरे कमरे में फैला दीवार का काला shape धीरे-धीरे सिकुड़ने लगा और फिर गायब

कमरा अब पूरी तरह normal लग रहा था कोई ठंडक नहीं कोई pressure नहीं मीरा ने गहरी सांस ली

मीरा - खत्म…?

लीडर - इस location पर… हाँ।

कबीर - और बाकी?

लीडर - बाकी अभी भी हैं।

आरव ने सीधे पूछा —

आरव - ये क्या था ?

लीडर ने थोड़ी देर सोचा फिर बोली

लीडर - “Clustered Residual Network.”
“पुरानी घटनाओं … कई deaths… और repeated exposure से बनता है।”

दूसरा member—

मेंबर - site secured.
“no active threat.”

लीडर ने सिर हिलाया —

लीडर - pack up.

कबीर - वैसे … thanks।

लीडर - तुम लोग जिंदा हो वही काफी है वैसे भी इस केस का charge हम लेंगे □

आरव - अगली बार पहले call करेंगे।

लीडर - अगली बार पहले समझना

Backup team बिना पीछे देखे बाहर निकल गई ना कोई drama… ना unnecessary बात बस काम और खत्म

मीरा धीरे से बैठ गई

मीरा - ये खत्म हुआ लेकिन

आरव - हाँ ये बड़ा है।

कबीर - great... मतलब फिर से काम मिलेगा 😑

आरव ने दीवार की तरफ आखिरी बार देखा अब वहाँ कुछ नहीं था लेकिन

उसने धीरे से कहा

आरव - ये आखिरी नहीं था

***

पंद्रह दिन बीत चुके थे पिछला केस खत्म हो चुका था लेकिन उसका असर अभी भी टीम के चेहरों पर था

लेकिन ये कहानी वहाँ से नहीं शुरू होती।

ये शुरू होती है एक छोटे से गाँव से

सूरज अभी पूरी तरह निकला नहीं था हल्की -हल्की धुंध खेतों पर तैर रही थी और उसी गाँव के बीच एक पक्का घर

बाकी कच्चे घरों के बीच थोड़ा अलग

घर के अंदर रोहित अपने कमरे में खड़ा था रेलवे की यूनिफॉर्म पहनते हुए करीब 42 साल का disciplined कम बोलने वाला आदमी

उसकी घड़ी हमेशा सही समय पर चलती थी और उसका दिन भी

रोहित - रितिका , चाय हो गई ?

रसोई से आवाज आई

रितिका - बस अभी लाई

रितिका लगभग 38 साल शांत लेकिन मजबूत , घर की हर चीज़ उसके control में थी खाना बच्चों की पढ़ाई घर का खर्च सब कुछ perfectly balance

वो चाय लेकर आई —

रितिका - आज फिर late मत होना

रोहित - कोशिश करूँगा

तभी अंदर से एक आवाज आई

आर्यन - मम्मी ! मेरा bag कहाँ है ?

15 साल का थोड़ा लापरवाह लेकिन दिल का अच्छा

हर चीज़ last moment पर करता था

रितिका (थोड़ा गुस्से में) - जहाँ कल फेंका था वहीं होगा !

आर्यन - मम्मी ! मैंने फेंका नहीं था बस रखा था

दूसरे कमरे से एक calm आवाज

निशा - bag सोफे के नीचे है।

सबकी नजर उस पर गई

18 साल समझदार , घर में अगर कोई चीज़ silently notice करता था तो वो थी निशा

आर्यन - तुझे कैसे पता ?

निशा (हल्की मुस्कान के साथ) - क्योंकि तुम हर बार वहीं रखते हो

चारों लोग एक साथ बैठे नाश्ता करते हुए Simple बातें कर रहे थे छोटी-छोटी नोक-झोंक लेकिन एक चीज़ साफ थी ये एक खुशहाल परिवार था।

निशा खिड़की की तरफ देख रही थी कुछ सेकंड के लिए उसकी नजर अटक गई जैसे उसने कुछ देखा हो

रितिका - क्या हुआ ?

निशा - कुछ नहीं मुझे लगा वहां कोई है

आर्यन - लगता है कल रात कोई हॉरर मुवी देखी होगी , अभी तक असर है ध्यान से कहीं भुत पकड़ के न ले जाए □□

रोहित ने घड़ी देखी

रोहित - मैं निकलता हूँ

उसने बैग उठाया और बाहर चला गया।

गाँव से स्टेशन तक जाने के लिए एक कच्चा रास्ता था और उस रास्ते के बीच एक पुराना पेड़ बहुत पुराना झुका हुआ सूखा , लेकिन अब भी खड़ा

रोहित हर दिन वहाँ से गुजरता था आज भी गुजरा लेकिन
जैसे ही वो उसके पास से निकला एक सेकंड के लिए
हवा ठंडी हो गई रोहित रुका चारों तरफ देखा कुछ नहीं
रोहित (धीरे से) - बेवजह सोच रहा हूँ।
और वो आगे बढ़ गया
घर में निशा फिर से खिड़की से बाहर देख रही थी इस बार
उसे साफ दिखा दूर वही पेड़ और उसके पास कोई खड़ा था लेकिन जब उसने ध्यान से देख वहाँ कुछ नहीं था
निशा (धीरे से) - ये क्या था? लगता है मुझे भी चस्मा लगवाना पड़ेगा गाँव में ज़िंदगी अपनी रफ्तार से चल रही थी ना कोई डर ना कोई अजीब घटना,बस वही रोज़ का routine
लेकिन कभी-कभी सब कुछ normal होना भी abnormal होता है😈

सुबह 9:30 बजे रोहित रेलवे स्टेशन पर था वो स्टेशन मास्टर नहीं था लेकिन उससे कम भी नहीं उसकी पोस्ट respectable थी जिम्मेदारी वाली

रोहित प्लेटफॉर्म पर खड़ा था ट्रेन धीरे-धीरे अंदर आ रही थी सीटी आवाज लोग भागते हुए सब कुछ controlled chaos, एक कर्मचारी उसके पास आया

कर्मचारी - सर, signal line में थोड़ी दिक्कत थी, अभी ठीक कर दिया है। रोहित - double check कर लो एक गलती और accident हो सकता है

उसकी आवाज में कोई गुस्सा नहीं था लेकिन seriousness थी
रोहित की आदत थी हर चीज़ को खुद verify करना
कागज़… टाइमिंग… सिस्टम… वो shortcut में विश्वास नहीं करता था

लंच टाइम पर बाकी लोग हँसते-बोलते बैठे थे लेकिन रोहित एक कोने में बैठकर quietly खाना खा रहा था एक colleague ने मजाक किया

कर्मचारी - सर, कभी हँस भी लिया कर डर लगता है आपसे

रोहित (हल्की मुस्कान) - काम सही चले तब डरने की क्या जरूरत

घर में रितिका का दिन भी उतना ही structured था सुबह बच्चों को तैयार करना घर साफ करना खाना बनाना और बीच-बीच में
थोड़ा खुद के लिए समय

वो आंगन में बैठी थी सब्ज़ी काटते हुए पास की एक पड़ोसन आई

पड़ोसन - दीदी, आपका तो सब सेट है पति अच्छी नौकरी में, बच्चे पढ़ने वाले
रितिका (हल्की मुस्कान) - सब ऊपर वाले की कृपा है
लेकिन उसके चेहरे पर एक चीज़ साफ थी जिम्मेदारी वो हर चीज़ संभालती थी बिना complain किए

दोपहर के समय निशा अपने कमरे में थी किताबें खुली हुई notes लिख रही थी वो पढ़ाई में serious थी लेकिन सिर्फ किताबों तक limited नहीं उसकी एक दोस्त का call आया
दोस्त - कॉलेज के बाद क्या प्लान है?
निशा - अभी कुछ fix नहीं लेकिन गाँव से बाहर जाना है
दोस्त - बड़े शहर
निशा - हाँ शायद
उसकी आँखों में एक goal था

दूसरी तरफ आर्यन पूरी तरह अलग था वो दोस्तों के साथ बाहर खेल रहा था क्रिकेट… शोर… हँसी… ये सब उसे पसंद था
आर्यन - अरे सही से डाल यार!
दोस्त - तू ही डाल ले फिर!
वो carefree था पढ़ाई से भागता था लेकिन family से जुड़ा हुआ था और कोई ग़लत आदत भी नहीं थी शाम को वो मोबाइल पर game खेल रहा था

रितिका - पढ़ाई कर ली?
आर्यन - हाँ (झूठ बोलते हुए)
निशा (पास से) - झूठ मत बोल एक chapter भी नहीं खोला।
आर्यन - तू CBI है क्या? और मैंरे पिछे हमेशा क्यूं परी रहती है निशा - अब चल शांति से पढ़ाई कर ले, मेरी दोस्त की बहन भी तेरे ही क्लास में है और जब जब तुम मुर्गा बनता है या जब भी सर तुझे पिछवाड़े में मारते हैं न तो वो मुझे बताती है
रात को चारों लोग एक साथ बैठे थे खाना खाते हुए छोटी-छोटी बातें दिन कैसा गया, स्कूल में क्या हुआ
आर्यन - पापा आपसे एक बात करनी है
रोहित - हँ बोलो
आर्यन - वो मेरी बेट टुट गई थी
रोहित - ठीक है
रितिका - कोई जरूरत नहीं है बेट की पढ़ाई करता नहीं है, आपने ही सर पर चढ़ा कर रखा है सबको बिगाड़ दिजिए
रोहित - सुन लिया न डांट खिला दी मुझे, पढ़ाई पर ध्यान दो ये समय वापस नहीं आएगा
आर्यन - जी😔(लेकिन उसका ध्यान खाने पर ज्यादा था 😅)
गाँव में सब कुछ पहले जैसा ही चल रहा था सुबह खेतों में लोग काम पर निकल जाते, दोपहर में गलियाँ खाली हो जातीं और शाम होते-होते चाय की दुकानों पर भीड़ लगने लगती। रोहित का परिवार भी अपनी रोज़मर्रा की जिंदगी में व्यस्त था।

उस दिन रोहित की ड्यूटी थोड़ी लंबी चली थी रेलवे स्टेशन पर inspection आने वाला था इसलिए पूरे स्टाफ पर दबाव था। शाम तक लगातार काम करते-करते उसका सिर भारी हो चुका था।

स्टेशन के बाहर निकलते समय उसका एक साथी उसके पास आया।

सुरेश- रोहित भाई, आज फिर उसी रास्ते से जाओगे क्या?

रोहित- और कौन सा रास्ता है?

सुरेश थोड़ा हिचकिचाया।

सुरेश- नहीं... बस ऐसे ही। रात में उस पुराने पेड़ के पास कम ही लोग जाते हैं।

रोहित ने उसकी तरफ देखा।

रोहित- तुम भी गाँव वालों जैसी बातें करने लगे?

सुरेश हल्का हँस दिया।

सुरेश- मैं नहीं मानता इन सबको... लेकिन बचकर रहने में क्या जाता है।

रोहित ने कोई जवाब नहीं दिया। उसने अपना बैग उठाया और बाहर निकल गया।

रास्ते में अंधेरा धीरे-धीरे बढ़ रहा था। दूर खेतों के बीच वही पुराना पेड़ खड़ा था। हवा बिल्कुल धीमी थी लेकिन उसकी सूखी शाखाएँ अपने-आप हिल रही थीं।

रोहित कुछ सेकंड के लिए रुका। फिर सिर झटककर आगे बढ़ गया।

घर पहुँचते-पहुँचते रात हो चुकी थी।

आँगन में आर्यन मोबाइल पर game खेल रहा था जबकि निशा बरामदे में बैठकर पढ़ रही थी। रितिका रसोई में थी।

रितिका- आज फिर देर हो गई।

रोहित- काम ज्यादा था।

वह हाथ-मुँह धोकर खाने के लिए बैठ गया। बाकी सब सामान्य था लेकिन आज वह कुछ ज्यादा चुप लग रहा था।

निशा ने ध्यान से उसकी तरफ देखा।

निशा- पापा, तबीयत ठीक है?

रोहित- बस थकान है।

खाना खत्म होने के बाद सब अपने-अपने काम में लग गए। रात लगभग साढ़े दस बजे बिजली चली गई।

गाँव में यह आम बात थी।

आर्यन तुरंत चिढ़ गया (battery low)

आर्यन- यार, सबसे important match के टाइम पर ही light जाती है।

रितिका- थोड़ी देर बिना मोबाइल के भी रह लिया करो।

निशा मोमबत्ती लेने अंदर चली गई। उसी समय रोहित आँगन में खड़ा था गर्मी की वजह से वह बाहर हवा खा रहा था।

पूरा घर अंधेरे में डूबा हुआ था। सिर्फ दूर-दूर कुछ घरों से लालटेन की हल्की रोशनी दिखाई दे रही थी।

तभी...

उसे लगा जैसे कोई सड़क के उस पार खड़ा है एक आदमी

अंधेरे में बिल्कुल स्थिर रोहित की नजर उस पर टिक गई
कुछ सेकंड बीत गए फिर अचानक बिजली वापस आ गई

पूरा आँगन रोशनी से भर गया।

लेकिन सड़क के उस पार … कोई नहीं था।

रोहित कुछ पल वहीं खड़ा रहा। फिर धीरे से अंदर चला गया।

उसने किसी को कुछ नहीं बताया।

उस रात जब सब सो चुके थे, रोहित की आँख अचानक खुली।

कमरे में बिल्कुल सन्नाटा था।

उसने करवट बदली तभी उसे लगा जैसे बाहर आँगन में कोई चल रहा है।

धीरे … नंगे पैरों से।

ठक…

ठक…

ठक…

रोहित उठकर बैठ गया।

उसने ध्यान से सुना।

आवाज फिर आई।

इस बार थोड़ी और पास।

ठक…

ठक…

ठक...

रितिका की नींद अब भी नहीं खुली थी।

रोहित धीरे से बिस्तर से उतरा और दरवाजे की तरफ बढ़ा।

उसने कुंडी पकड़ी।

एक सेकंड के लिए उसका हाथ रुक गया।

फिर उसने दरवाजा खोल दिया।

बाहर...

कोई नहीं था।

सिर्फ खाली आँगन और ठंडी हवा लेकिन जमीन पर गीली मिट्टी से बने पैरों के निशान थे जो आँगन के बीच से शुरू होकर सीधे उसके कमरे के दरवाजे तक आए थे।

सुबह जब रोहित की आँख खुली तो सूरज काफी ऊपर आ चुका था रात की बात उसके दिमाग में अब भी घूम रही थी कुछ देर तक वह चुपचाप बिस्तर पर बैठा रहा फिर धीरे से बाहर निकल आया।

आँगन पूरी तरह साफ था ना कोई मिट्टी ना पैरों के निशान
जैसे रात में कुछ हुआ ही न हो रितिका रसोई में थी निशा पौधों में पानी डाल रही थी और आर्यन अब भी सो रहा था।

सब कुछ सामान्य था रोहित कुछ देर तक आँगन को देखता रहा रितिका ने उसकी तरफ देखा

रितिका- क्या हुआ?

रोहित- कुछ नहीं

वह बात वहीं खत्म करना चाहता था खुद उसे भी लग रहा था कि शायद उसने आधी नींद में कुछ गलत देख लिया होगा लेकिन पूरे दिन उसका ध्यान बार-बार उसी बात पर जा रहा था।

रेलवे स्टेशन पर भी वह पहले जैसा focused नहीं था दो बार उससे छोटी- छोटी गलती हो गई जो आमतौर पर कभी नहीं होती थी।

सुरेश ने notice कर लिया।

सुरेश- सब ठीक है?

रोहित- हाँ।

सुरेश- चेहरा कुछ और बोल रहा है।

रोहित ने जवाब नहीं दिया उसने फाइल बंद की और बाहर प्लेटफॉर्म की तरफ देखने लगा दूर पटरी के उस पार उसे कुछ सेकंड के लिए फिर वही एहसास हुआ।

जैसे कोई उसे देख रहा हो लेकिन इस बार जब उसने ध्यान से देखा वहाँ सिर्फ लोग थे, जैसे तैसे दिन बीता शाम को वह घर जल्दी लौट आया।

घर का माहौल हमेशा की तरह शांत था रितिका रसोई में खाना बना रही थी टीवी पर कोई पुराना serial चल रहा था। आर्यन homework करने का नाटक कर रहा था और निशा किताब लेकर बैठी थी।

तभी अचानक रितिका की आवाज आई।

रितिका- निशा, तुमने आटा बाहर रखा था क्या?

निशा- नहीं।

रितिका बाहर आई उसके हाथ में आटे का डिब्बा था पूरा डिब्बा खुला हुआ था और आटा फर्श पर बिखरा पड़ा था।

आर्यन- बिल्ली होगी

रितिका- बिल्ली ढक्कन खोलकर वापस side में नहीं रखती

कुछ सेकंड के लिए सब चुप रहे फिर रोहित ने खुद जाकर देखा ढक्कन सच में बड़े आराम से side में रखा हुआ था जैसे किसी ने जानबूझकर खोला हो रोहित ने बिना कुछ बोले सब साफ करना शुरू कर दिया।

रात में खाने के समय भी वह चुप था निशा बार-बार उसकी तरफ देख रही थी

निशा- पापा... कुछ हुआ है क्या?

रोहित- नहीं

निशा- आप कल रात भी ठीक से नहीं सोए थे

रोहित कुछ बोलने ही वाला था लेकिन फिर रुक गया

रितिका- अगर कोई परेशानी है तो बताइए

रोहित ने धीरे से पानी पिया

रोहित- बस काम का तनाव है

उसने बात वहीं खत्म कर दी रात लगभग ग्यारह बजे सब सो गए इस बार बारिश शुरू हो चुकी थी बाहर हवा तेज चल रही थी खिड़कियाँ हल्की-हल्की हिल रही थीं।

करीब आधी रात को निशा की नींद खुली उसे लगा जैसे बाहर बरामदे में कोई खड़ा है पहले उसने ध्यान नहीं दिया लेकिन फिर उसे साफ सुनाई दिया कोई बहुत धीरे-धीरे साँस ले रहा था।

निशा बिस्तर पर उठकर बैठ गई कमरे के बाहर अंधेरा था
कुछ सेकंड बाद उसे लगा जैसे कोई दरवाजे के ठीक दूसरी तरफ खड़ा है बिल्कुल स्थिर

उसकी साँसें तेज हो गईं वह धीरे से बिस्तर से उतरी और दरवाजे के पास गई।

फिर अचानक दरवाजे पर तीन बार हल्की दस्तक हुई।

ठक...

ठक...

ठक...

निशा जम गई कुछ सेकंड बाद बाहर से आवाज आई

रोहित- निशा... दरवाजा खोलो।

वह थोड़ा शांत हुई।

आवाज उसके पिता की ही थी।

निशा ने दरवाजा खोलने के लिए हाथ बढ़ाया... लेकिन तभी उसकी नजर दरवाजे के नीचे गई।

बाहर खड़े आदमी के पैर दिखाई दे रहे थे गीली मिट्टी से सने हुए

और उनकी दिशा उल्टी थी😈....

• ‹

निशा का हाथ कुंडी पर ही रुक गया उसकी नजर दरवाजे के नीचे दिख रहे पैरों पर अटक गई गीली मिट्टी और एड़ियाँ सामने की तरफ कुछ सेकंड के लिए उसके दिमाग ने काम करना बंद कर दिया।

बाहर फिर वही आवाज आई

रोहित- निशा.. दरवाज़ा खोलो

आवाज़ बिल्कुल वही थी वही ठहराव… वही लहजा लेकिन अब निशा को यकीन हो चुका था कि बाहर जो भी है वो उसके पिता नहीं हैं उसने धीरे से हाथ पीछे खींच लियाउसकी सांसें तेज हो गईं, लेकिन उसने खुद को शांत रखने की कोशिश की

निशा- पापा… आप कब आए?

कुछ सेकंड तक कोई जवाब नहीं आया फिर वही आवाज

रोहित- अभी दरवाज़ा खोलो

इस बार आवाज में हल्की-सी खुरदराहट थी जैसे शब्दों को ज़बरदस्ती दोहराया जा रहा हो निशा एक कदम पीछे हट गई कमरे के अंदर सन्नाटा था बाहर बारिश की आवाज और तेज हो चुकी थी

ठक…

दरवाज़े पर एक और हल्की दस्तक इस बार थोड़ा ज़ोर से

ठक… ठक…

निशा ने अचानक फैसला लिया वह तेजी से पीछे हटी और कमरे की लाइट जला दी रोशनी फैलते ही उसने फिर नीचे देखा दरवाज़े के नीचे… कुछ नहीं था ना कोई पैर ना कोई परछाई बाहर पूरी तरह सन्नाटा उसने कुछ सेकंड तक वहीं खड़े रहकर इंतजार किया फिर धीरे से आगे बढ़ी और कुंडी खोली

दरवाज़ा खोलते ही सामने खाली बरामदा था हवा तेज चल रही थी बारिश की बूंदें अंदर तक आ रही थीं कोई नहींनिशा का दिल अब भी जोर से धड़क रहा था वह धीरे-धीरे बाहर आई और इधर-उधर देखने लगी। तभी पीछे से आवाज आई

रितिका- क्या हुआ?

निशा झटके से पलटी रितिका अपने कमरे से बाहर आई थी उसके चेहरे पर नींद और चिंता दोनों थी

निशा- मम्मी आपने किसी को बाहर आते-जाते देखा?

रितिका- नहीं… क्यों?

निशा कुछ सेकंड चुप रही वह तय नहीं कर पा रही थी कि जो उसने देखा वो सच था या नहीं

निशा- कुछ नहीं… शायद भ्रम था

उसी समय रोहित भी अपने कमरे से बाहर आया

रोहित- क्या हुआ?

निशा ने उसकी तरफ देखा इस बार उसके पैर बिल्कुल सामान्य थे साफ बिना मिट्टी के, निशा ने कुछ नहीं कहा

निशा- कुछ नहीं पापा बस नींद खुल गई थी

रोहित ने कुछ पल उसे देखा, फिर सिर हिलाकर वापस अपने कमरे में चला गया रितिका भी अंदर चली गई बरामदे में अब सिर्फ निशा खड़ी थी उसने एक बार फिर नीचे जमीन को देखा सब साफ था लेकिन उसके दिमाग में वो उल्टे पैर अब भी साफ दिख रहे थे

वह धीरे से अपने कमरे में वापस आई और दरवाज़ा बंद कर लिया उसने कुंडी भी लगा दी

बिस्तर पर बैठकर वह काफी देर तक छत को देखती रही नींद तो उसकी आंखों से पूरी तरह गायब हो चुकी थी

सुबह होते ही घर का माहौल सामान्य था आर्यन वैसे ही शोर कर रहा था रितिका अपने काम में लगी थी रोहित चुपचाप अखबार पढ़ रहा था

लेकिन निशा के लिए सब कुछ बदल चुका था वह बार-बार रोहित की तरफ देख रही थी कुछ तो अजीब था लेकिन क्या ये उसे अभी तक समझ नहीं आ रहा था

दोपहर में जब वह अकेली थी, उसने मोबाइल उठाया कुछ देर तक contact list को देखती रही फिर उसने एक नंबर पर उंगली रोक दी, लेकिन call नहीं किया उसने फोन वापस रख दिया, उसे पहले प्रूफ चाहिए था

लेकिन अंदर कहीं उसे महसूस हो रहा था कि ये शुरुआत है और जो भी है वो अब घर के बाहर नहीं अंदर आ चुका है वो दिन भी जैसे तैसे निकल गया।

सुबह का माहौल हमेशा की तरह था, लेकिन एक फर्क था अब घर में हर चीज़ सामान्य दिख रही थी, पर महसूस कुछ और हो रहा था जैसे किसी अनदेखी चीज़ ने चुपचाप अपनी जगह बना ली हो।

रोहित जल्दी उठ गया था वह आँगन में खड़ा था, हाथ में चाय का कप उसकी नजरें कहीं दूर थीं रात की कोई बात उसके चेहरे पर नहीं थी, लेकिन उसकी आँखों में हल्की थकान थी।

रितिका उसके पास आई

रितिका- आज बहुत जल्दी उठ गए

रोहित- नींद खुल गई

रितिका- तबीयत तो ठीक है?

रोहित- हाँ

सीधा जवाब कोई विस्तार नहीं रितिका ने कुछ पल उसे देखा, फिर वापस अंदर चली गई निशा दरवाजे के पास खड़ी सब देख रही थी। वह अब हर चीज़ को अलग नजर से देख रही थी। खासकर रोहित को

उसे कुछ अजीब नहीं दिख रहा था लेकिन कुछ ठीक भी नहीं लग रहा था रोहित ड्यूटी पर चला गया घर में अब सिर्फ रितिका और बच्चे थे आर्यन अपने कमरे में था, मोबाइल पर लगा हुआ बीच-बीच में गेम की आवाज आ रही थी

निशा बरामदे में बैठी थी किताब उसके सामने खुली थी , लेकिन उसका ध्यान कहीं और था

रितिका रसोई में थी कुछ देर बाद रितिका ने आवाज लगाई

रितिका - निशा , जरा ये डिब्बा ऊपर रख दो

निशा उठकर रसोई में गई

जैसे ही उसने डिब्बा उठाया , उसे अचानक लगा जैसे उसके पीछे कोई खड़ा है बहुत पास उसकी सांस एक पल को रुक गई वह धीरे से पलटी कोई नहीं रसोई खाली थी रितिका दूसरी तरफ खड़ी थी , उसे कुछ पता नहीं था

निशा ने खुद को संभाला

निशा - मम्मी आप अभी यहीं थीं ?

रितिका - हाँ , क्यों ?

निशा - कुछ नहीं

वह वापस बरामदे में आ गई अब उसका शक और गहरा हो गया था शाम को आर्यन बाहर खेलने गया हुआ था निशा अपने कमरे में थी अचानक उसे लगा जैसे घर के अंदर कोई धीरे -धीरे चल रहा है

ठक…

ठक…

ठक…

वही नंगें पैरों की आवाज इस बार वह डरकर चुप नहीं बैठी वह दरवाजे तक गई और धीरे से उसे खोला बाहर हॉल में हल्का अंधेरा था आवाज किचन की तरफ से आ रही थी निशा धीरे -धीरे आगे बढ़ी जैसे ही वह किचन के पास पहुँची , आवाज बंद हो गई

वह कुछ सेकंड वहीं खड़ी रही फिर अंदर झाँका किचन खाली था सब कुछ अपनी जगह पर तभी उसे पीछे से किसी के हँसने की बहुत हल्की आवाज सुनाई दी एकदम धीमी जैसे कोई उसके बिल्कुल पास खड़ा हो

निशा तुरंत पलटी कोई नहीं लेकिन इस बार उसकी सांसें तेज हो चुकी थीं यह सिर्फ उसका वहम नहीं था कुछ था जो उसे देख रहा था और अब खेल रहा था

रात को जब रोहित वापस आया तो घर का माहौल सामान्य था लेकिन निशा ने तय कर लिया था वह अब इंतजार नहीं करेगी रात को अपने कमरे में बैठकर उसने मोबाइल उठाया इस बार उसने बिना सोचे वही नंबर डायल किया फोन कुछ सेकंड तक बजता रहा फिर कॉल उठी दूसरी तरफ कुछ सेकंड सन्नाटा रहा फिर एक शांत आवाज आई

आरव- हेलो..…

निशा कुछ पल चुप रही फिर उसने धीरे से कहा

निशा- मुझे मदद चाहिए

दूसरी तरफ कुछ सेकंड की खामोशी रही फिर वही सीधी आवाज

आरव- क्या हो रहा है?

निशा ने गहरी सांस ली

निशा- हमारे घर में कुछ है
इस बार जवाब तुरंत आया

आरव- address भेजो

कॉल कट हो गई, निशा ने फोन नीचे रखा उसके चेहरे पर डर अब भी था लेकिन पहली बार उसे लगा कि अब वह अकेली नहीं है उसी समय घर के बाहर, अंधेरे में
कोई खड़ा था वही आकृति, वही साया धीरे-धीरे उसने सिर उठाया और घर की तरफ देखने लगा।

अगली सुबह गाँव पहले की तरह ही जागा, लेकिन इस घर के भीतर अब एक अलग तरह की चुप्पी थी निशा ने रात को जो किया था, उसके बाद से वह हर आवाज़ पर ध्यान दे रही थी। रितिका अपने काम में लगी थी, आर्यन अब भी बेफिक्र दिखने की कोशिश कर रहा था, और रोहित सामान्य व्यवहार कर रहा था।

लेकिन यह सामान्य अब सामान्य नहीं रह गया था दोपहर के करीब एक गाड़ी गाँव के बाहर आकर रुकी। कच्चे रास्ते पर धूल उठी और धीरे-धीरे बैठ गई।

गाड़ी से तीन लोग उतरे आरव, कबीर और मीरा

तीनों के चेहरे पर वही पुरानी गंभीरता थी। बिना किसी अनावश्यक बात के, उन्होंने घर की तरफ चलना शुरू किया।

दरवाज़े पर पहुँचकर आरव ने एक बार चारों तरफ देखा। उसकी नजर कुछ सेकंड के लिए दूर खड़े उस पुराने पेड़ पर गई, फिर वह वापस दरवाज़े की तरफ मुड़ा।

उसने दरवाज़ा खटखटाया अंदर से कदमों की आवाज आई दरवाज़ा खुला सामने निशा थी कुछ सेकंड के लिए दोनों एक-दूसरे को देखते रहे

निशा- आप… आरव?

आरव- हाँ

कबीर ने हल्के अंदाज़ में इधर-उधर देखा।

कबीर- अच्छा घर है… लेकिन vibe ठीक नहीं है।

मीरा ने बिना कुछ बोले अंदर कदम रखा रितिका बाहर आई उसके चेहरे पर हल्की घबराहट थी।

रितिका- आप लोग…?

निशा- मम्मी, मैंने ही बुलाया है

रितिका ने एक पल के लिए उसे देखा, फिर चुप हो गई।

आरव ने सीधा पूछा।

आरव- जो भी हुआ है, शुरू से बताइए।

सब लोग हॉल में बैठ गए।

निशा ने धीरे-धीरे सारी बातें बतानी शुरू कीं। रात की दस्तक… उल्टे पैर… आटे का बिखरना… और घर के अंदर चलने की आवाज़।

रितिका और आर्यन पहली बार यह सब सुन रहे थे।

आर्यन- ये सब… तूने हमें बताया क्यों नहीं?

निशा- पहले मुझे खुद यकीन नहीं था।

रोहित अब तक चुप बैठा था।

आरव की नजर उस पर टिक गई।

आरव- आप कुछ कहना चाहेंगे?

कुछ सेकंड की खामोशी रही।

फिर रोहित ने धीरे से कहा।

रोहित - एक-दो अजीब चीज़ें तो मैंने भी notice की हैं।

कबीर ने हल्का सिर टेढ़ा किया।

कबीर - जैसे ?

रोहित - रात में आवाज़ें और ऐसा लगता है जैसे कोई आसपास हो

मीरा अब तक घर के हर कोने को ध्यान से देख रही थी। वह धीरे-धीरे आँगन की तरफ चली गई।

आरव ने उसकी तरफ देखा।

आरव- कुछ मिला ?

मीरा - presence है ... लेकिन direct नहीं।

कबीर - मतलब?

मीरा - ये यहाँ रहता नहीं ... आता-जाता है।

कमरे में फिर खामोशी छा गई आरव उठकर खड़ा हुआ

आरव- हमें जगह देखनी होगी। हर कोना।

रितिका थोड़ा असहज थी, लेकिन उसने मना नहीं किया।

टीम ने घर का निरीक्षण शुरू किया।

कमरे ... रसोई ... बरामदा ...

सब कुछ सामान्य दिख रहा था।

लेकिन जब वे आँगन में पहुँचे, मीरा एक जगह रुक गई।

वह जमीन को देख रही थी।

मीरा- यहाँ।

सबकी नजर वहाँ गई।

कुछ नहीं था।

साफ जमीन।

कबीर- क्या?

मीरा- residual marks… बहुत हल्के हैं… लेकिन हैं।

आरव झुका और ध्यान से देखने लगा।

आरव- ये अंदर आता है… और यहीं तक रहता है।

कबीर ने धीरे से कहा।

कबीर- मतलब… इसे कोई अंदर बुला रहा है… या ये खुद किसी से जुड़ा हुआ है।

तीनों की नजर एक साथ रोहित की तरफ गई कुछ सेकंड के लिए माहौल भारी हो गया रोहित ने उनकी तरफ देखा

रोहित- क्या मतलब है आपका?

आरव ने सीधा जवाब दिया

आरव- ये किसी एक से attach है।

खामोशी रितिका अब साफ घबरा चुकी थी

रितिका- साफ-साफ बताइए क्या हो रहा है?

मीरा ने धीरे से कहा

मीरा - अभी कुछ confirm नहीं है लेकिन ये चीज़ इस घर में किसी के साथ आई है।

कबीर ने हल्के से गहरी सांस ली।

कबीर - और हमें पता लगाना है … वो कौन है।

उसी समय आँगन के बाहर से हल्की हवा चली दरवाज़ा अपने आप थोड़ा हिल गया

किर्र …

सबकी नजर एक साथ उस तरफ गई कुछ सेकंड तक कोई नहीं बोला फिर

कबीर - मुझे चुनौती दे रहा है पछताएगा बेटा

आरव ने शांत आवाज में कहा

आरव- आज रात हम यहीं रुकेंगे।

कबीर - और जो भी है उसे सामने लाएँगे

मीरा ने आखिरी बार पूरे घर को देखा।

मीरा - ये खुद सामने आएगा या आएगी

रात अभी दूर थी …

शाम धीरे -धीरे रात में बदल रही थी घर के बाहर अंधेरा गहराने लगा था और अंदर एक अजीब-सी खामोशी फैल गई थी इस बार कोई भी इसे सामान्य नहीं मान रहा था

आरव ने हॉल के बीच में खड़े होकर पूरे घर को देखा उसकी नजरें हर कोने को नाप रही थीं , जैसे वह किसी पैटर्न को समझने की कोशिश कर रहा हो।

आरव- सब लोग एक ही जगह रहेंगे

कोई अकेला नहीं जाएगा रितिका ने तुरंत सिर हिलाया आर्यन पहली बार पूरी तरह चुप था मीरा आँगन के किनारे खड़ी थी उसकी आँखें बंद थीं, जैसे वह किसी हल्की-सी तरंग को महसूस कर रही हो

कबीर अपने बैग से कुछ छोटे devices निकाल रहा था

कबीर- basic setup लगा देता हूँ अगर ये active हुआ तो signal मिल जाएगा

उसने चारों कोनों में छोटे sensors लगा दिए हल्की-सी नीली रोशनी blink करने लगी

रोहित अब तक चुप था। वह दीवार से टिककर खड़ा था, लेकिन उसकी नजरें बार-बार दरवाज़े की तरफ जा रही थीं।

आरव ने उसे notice किया

आरव- आप ठीक हैं?

रोहित- हाँ

आरव- कब से notice कर रहे हैं ये सब?

कुछ सेकंड की खामोशी रही

रोहित- तीन… चार दिन से

आरव- उससे पहले कुछ हुआ था?

रोहित ने तुरंत जवाब नहीं दिया उसने नजरें हटा लीं

मीरा ने धीरे से आँखें खोलीं

मीरा- कुछ है जो आप बता नहीं रहे

कमरे का माहौल और भारी हो गया रितिका ने रोहित की तरफ देखा

रितिका- अगर कुछ है तो बता दीजिए

अब सबकी नजर उसी पर थी, रोहित ने गहरी सांस ली

रोहित- उस दिन मैं ड्यूटी से लौट रहा था

कमरे में सन्नाटा छा गया

रोहित- रास्ते में उसी पुराने पेड़ के पास रुका था

कबीर ने हल्का सिर उठाया

कबीर- फिर?

रोहित- कुछ खास नहीं बस थोड़ी देर रुका और चला आया

आरव- और?

रोहित ने कुछ सेकंड चुप रहकर कहा

रोहित- मैंने वहाँ बेवजह रुककर गड़बड़ की

कबीर समझ गया

कबीर- disrespect किया

रोहित ने कुछ नहीं कहा, लेकिन उसका चेहरा ही जवाब था
मीरा ने धीरे से कहा

मीरा- वो जगह खाली नहीं थी

खामोशी

आर्यन अब समझ नहीं पा रहा था, लेकिन डर उसके चेहरे पर साफ था

आर्यन- आप लोग क्या बोल रहे हो?

आरव ने सीधा जवाब दिया

आरव- कुछ जगहें सिर्फ जगह नहीं होतीं

रितिका के चेहरे का रंग उड़ चुका था

रितिका- मतलब ये सब उसी वजह से हो रहा है?

मीरा- बहुत संभव है

कबीर ने devices की तरफ देखा

कबीर- और ये जो भी है ये random नहीं है ये target कर रहा है

रोहित की मुट्ठी हल्की-सी भींच गई

रोहित- अगर मुझसे गलती हुई है तो उसे मुझसे ही deal करना चाहिए

आरव ने तुरंत सिर हिलाया

आरव- नहीं ये अब आप तक limited नहीं है

मीरा- ये घर के अंदर आ चुका है

उसी समय, एक sensor ने हल्की-सी आवाज की

बीप सबकी नजर उस पर गई नीली light अब तेज़ी से blink कर रही थी कबीर सीधा उसकी तरफ बढ़ा

कबीर- movement detect हुआ हैं

आर्यन घबरा गया

आर्यन - कहाँ ?

कबीर ने धीरे से कहा

कबीर - अंदर ही

कमरे में एकदम सन्नाटा छा गया मीरा ने धीरे से फुसफुसाया

मीरा - ये आ गया है

उसी समय, हॉल के दूसरे कोने से हल्की -सी आवाज आई

ठक…
ठक…
ठक…

वही नंगे पैरों की चाल इस बार सब सुन रहे थे रितिका ने घबराकर निशा का हाथ पकड़ लिया आरव ने बिना हिले कहा

आरव- कोई भागेगा नहीं

आवाज़ धीरे -धीरे पास आ रही थी

ठक…
ठक…
ठक…

फिर अचानक …

आवाज़ बंद हो गई कुछ सेकंड तक कुछ नहीं हुआ

फिर …

दीवार पर एक लंबी काली परछाई उभरने लगी धीरे -धीरे जैसे कोई खड़ा हो रहा हो ,आर्यन की आवाज काँप गई

आर्यन - वो ... क्या है ?

कबीर ने धीरे से कहा

कबीर - ये खुद दिख रहा है

परछाई अब साफ हो चुकी थी ,एक इंसान जैसा आकार
लेकिन proportions थोड़े बिगड़े हुए और उसके पैर
उल्टी दिशा में मुड़े हुए मीरा ने धीमे स्वर में कहा

मीरा - ये attach है लेकिन पूरा control नहीं है

आरव ने आगे कदम बढ़ाया

आरव- सामने आओ कुछ सेकंड तक कुछ नहीं हुआ
फिर वह परछाई हल्की -सी हिली और एक आवाज आई

खुरदुरी टूटी हुई

“वापस ... चल...”

कमरे की हवा ठंडी हो गई , कबीर ने धीरे से कहा

कबीर - ये इसे वापस बुला रहा है

आरव- किसे ?

मीरा ने बिना नजर हटाए कहा

मीरा - इसे

उसने सीधे रोहित की तरफ इशारा किया ,रोहित स्थिर खड़ा था उसकी आँखें
उस परछाई पर जमी थीं और पहली बार

उसके चेहरे पर डर साफ दिखाई दे रहा था ....

कुछ भी सामान्य नहीं था पैर उल्टी दिशा में मुड़े हुए और शरीर जैसे आधा ठोस, आधा धुआँ

कबीर - हाहाहा अब आया न दोस्त, क्या दोस्त खाएगा गोस्त 😜

कोई भी हिल नहीं रहा था आरव एक कदम आगे बढ़ा

कबीर ने तुरंत अपने device की settings बढ़ा दी

कबीर- field stable है लेकिन ज्यादा देर नहीं रोक पाएगा

मीरा की नजर उस आकृति पर टिकी थी

मीरा- ये पूरी तरह यहाँ नहीं है आधी उर्जा बाहर हैं आधी अंदर।

फिर वही आवाज गूंजी

“वापस चल”

इस बार साफ था ये आवाज रोहित के लिए थी रोहित के पैर जैसे जमीन में जड़ गए थे उसकी सांसें भारी हो रही थीं

रितिका- रोहित…

उसने उसका हाथ पकड़ना चाहा, लेकिन आरव ने बीच में रोक दिया

आरव- अभी नहीं

आवाज़ फिर से आई, इस बार थोड़ी तेज़

“वापस. चल”

रोहित ने अचानक एक कदम आगे बढ़ाया

निशा- पापा नहीं

कबीर ने तुरंत react किया

कबीर- hold करो इसे

लेकिन रोहित जैसे सुन ही नहीं रहा था। उसकी आँखें खाली थीं जैसे कोई उसे खींच रहा हो मीरा ने तेज़ आवाज में कहा

मीरा- ये control करने की कोशिश कर रहा है

आरव ने बिना समय गंवाए अपनी जेब से एक छोटा metallic pendant निकाला और जमीन पर एक तेज़ रेखा खींची

आरव- इसके पार मत आने देना!

कबीर ने तुरंत device उस line के पास activate कर दिया, जैसे ही रोहित उस रेखा के करीब पहुँचा वह अचानक रुक गया उसका शरीर जोर से झटका खाकर पीछे हुआ रोहित जमीन पर गिर पड़ा रितिका उसकी तरफ भागी

रितिका- रोहित

इस बार आरव ने नहीं रोका, मीरा की नजर अब भी उस आकृति पर थी

मीरा- ये उसे ले जाना चाहता है उसी जगह

कबीर- पेड़

आरव ने सिर हिलाया

आरव- connection वहीं बना है

दीवार पर बनी आकृति अचानक और गहरी हो गई उसके आसपास की हवा हिलने लगी फिर एक झटका और वह आकृति दीवार से अलग होकर फर्श पर उतर आई
अब वो सिर्फ परछाई नहीं थी वो सामने थी
कमरे के बीच उसकी ऊँचाई थोड़ी ज्यादा शरीर टेढ़ा और चेहरा साफ नहीं

लेकिन उसकी नजर सीधे रोहित पर थी आर्यन पीछे हट गया

आर्यन - ये ... ये सच में है भभ ...भूत ☠

कबीर ने दाँत भींचे

कबीर - अब मजाक नहीं है

मीरा धीरे-धीरे आगे बढ़ी

मीरा - कुछ करना होगा ... अभी

आरव- कबीर , net

कबीर - ready

जैसे ही आकृति एक कदम आगे बढ़ी कबीर ने device activate किया एक हल्की energy mesh उसकी तरफ गई आकृति ने उसे छूते ही जोर से झटका खाया
एक अजीब-सी आवाज निकली ना पूरी चीख ना पूरी आवाज लेकिन वह रुकी नहीं
वह फिर आगे बढ़ी
इस बार तेज़ सीधे रोहित की तरफ

आरव बीच में आ गया

आरव- रुक जाओ

कुछ सेकंड के लिए सब कुछ स्थिर हो गया आकृति उसके सामने रुक गई
दोनों आमने-सामने आरव ने धीरे से कहा

आरव- ये गलती थी जानबूझकर नहीं

कोई जवाब नहीं , बस वही भारी सन्नाटा

फिर अचानक आकृति का सिर टेढ़ा हुआ जैसे वह सुन रही हो और फिर उसने
बहुत धीमी आवाज में कहा

“वापस…”

आरव- नहीं जाएगा

कबीर ने पीछे से कहा

कबीर- ये मानने वाला नहीं है

मीरा- क्योंकि ये अकेला नहीं है

आरव ने एक सेकंड के लिए उसकी तरफ देखा

आरव- time नहीं है

उसने तुरंत फैसला लिया

आरव- इसे यहीं खत्म नहीं कर सकते connection तोड़ना होगा

कबीर- मतलब वहाँ जाना पड़ेगा

मीरा ने धीरे से कहा

मीरा- अभी

रितिका ने घबराकर पूछा

रितिका- क्या मतलब?

आरव ने सीधा जवाब दिया

आरव- ये यहाँ तब तक रहेगा जब तक हम उस जगह को बंद नहीं करते जहाँ से ये जुड़ा है

कबीर- पेड़

कमरे में खामोशी छा गई बाहर रात पूरी तरह उतर चुकी थी

हवा तेज़ हो गई थी दीवार पर लगी खिड़की अपने आप हिलने लगी

ठक… ठक…

आकृति फिर से हिली इस बार और बेचैन जैसे समय खत्म हो रहा हो आरव ने तुरंत कहा

आरव- हम अभी निकलते हैं

मीरा- ये भी आएगा

कबीर- और अगर रास्ते में कुछ किया तो?

आरव- तब वहीं खत्म करेंगे

उसने रोहित की तरफ देखा रोहित अब धीरे-धीरे होश में आ रहा था

आरव- चल पाएँगे?

रोहित ने मुश्किल से सिर हिलाया

रोहित- हाँ

आरव ने बाकी सबकी तरफ देखा

आरव- कोई पीछे नहीं रहेगा

कबीर- great रात, गाँव, और haunted पेड़ perfect combination।

मीरा ने दरवाज़े की तरफ देखा

मीरा- ये रास्ता खुद खोलेगा

उसी समय घर का मुख्य दरवाज़ा अपने आप धीरे-धीरे खुल गया बाहर काला अंधेरा था और दूर वही पेड़ हवा अब सीधे उसी दिशा से आ रही थी

आर्यन - वाह ये भूत तो इन सबका बात मान रहा है

आकृति दरवाज़े की तरफ मुड़ी फिर धीरे-धीरे आगे बढ़ी
जैसे रास्ता दिखा रही हो आरव ने एक आखिरी बार घर के अंदर देखा फिर कहा

आरव- चलते हैं

और सब उसके पीछे बाहर निकल गए रात अब पूरी तरह उनकी हो चुकी थी वो लोग वहां पेड़ के पास गए वैसे वो पेड़ दुर था लेकिन उनकी खिड़की से दिखता था

रात गहरी हो चुकी थी। घर के बाहर हल्की ठंड थी, लेकिन अंदर एक अजीब बेचैनी फैली हुई थी रोहित का परिवार हॉल में बैठा था किसी की भी हिम्मत नहीं हो रही थी कि अकेले किसी कमरे में जाए वो सब वापस आ गए थे वहां उन्हें कुछ नहीं मिला था

आरव खिड़की के पास खड़ा बाहर देख रहा था उसकी नजर बार-बार उसी पेड़ पर जा रही थी कुछ देर की खामोशी के बाद वह धीरे से मुड़ा।

आरव- शुरुआत वहीं से हुई थी है ना?

रोहित ने सिर झुका लिया। उसके चेहरे पर थकान और डर साफ दिख रहा था रोहित बहुत उदास था लग रहा था जैसे अब वो रो देगा

रोहित- हाँ उस दिन मैं ड्यूटी से लौट रहा था रास्ते में उस पेड़ के पास रुक गया

रोहित ऐसे बोल रहा था जैसे कोई बच्चा बड़े से शिक़ायत कर रहा हो ,कबीर हल्का सा मुस्कुराया, लेकिन उसकी आँखें गंभीर थीं

कबीर- रुक गए या कुछ और भी किया?

रोहित थोड़ा झिझका, फिर धीरे से बोला

रोहित - मैंने वहीं पेशाब कर दिया था

कमरे में कुछ सेकंड के लिए खामोशी छा गई मीरा ने तुरंत अपनी नोटबुक में कुछ लिखा

आर्यन (गला फार फार के हंसते हुए) □- आपने.. आपने वहां पेशाब कर दिया हाहाहा □, इसलिए तो वो हमें परेशान कर रही है □□

रितिका अपना आंख दिखाती है जिसे देखकर आर्यन शांत हो जाता है

मीरा - और उसके बाद ?

रोहित - उसके बाद पहले कुछ नहीं हुआ लेकिन उसी रात मुझे लगा कोई मुझे देख रहा है मैंने सोचा वहम है लेकिन फिर

रितिका ने बात आगे बताई

रितिका - फिर घर में चीजें अपने आप हिलने लगीं दरवाजे खुलने लगे और ये

उसने रोहित की तरफ देखा

रितिका - ये बदलने लगे

आरव ने ध्यान से रोहित को देखा

आरव- कैसे बदले ?

रोहित ने गहरी सांस ली

रोहित - गुस्सा , बहुत ज्यादा गुस्सा आने लगा था बिना वजह और कई बार मुझे खुद याद नहीं रहता था कि मैंने क्या किया

आर्यन धीरे से बोला

आर्यन- अच्छा इसलिए, एक बार पापा ने मुझे धक्का दे दिया था लेकिन बाद में उन्हें याद भी नहीं था मुझे लगा मम्मी से डांट परी है

निशा ने डरते हुए कहा

निशा- और वो रात को उठकर उस पेड़ की तरफ देखने लगते थे

कमरे का माहौल और भारी हो गया कबीर अब पूरी तरह गंभीर हो चुका था

कबीर- मतलब ये सीधा attachment नहीं है ये influence है

मीरा ने सिर हिलाया।

मीरा- और ये influence सिर्फ डराने के लिए नहीं ये धीरे धीरे control लेने की कोशिश कर रहा है

आरव ने फिर वही सवाल पूछा, लेकिन इस बार आवाज थोड़ी सख्त थी

आरव- उस दिन उस पेड़ के पास तुम्हें कुछ अजीब लगा था?

रोहित ने आँखें बंद कर याद करने की कोशिश की, कुछ सेकंड बाद उसका चेहरा थोड़ा बदल गया

रोहित- हाँ एक बात थी

सबकी नजरें उस पर टिक गईं

रोहित- वहाँ पहले से कुछ पड़ा था जमीन पर

कबीर तुरंत आगे झुका

कबीर- क्या?

रोहित- मुझे लगा कोई पुरानी चीज है जैसे कपड़ा या राख मैंने ध्यान नहीं दिया और बस

कबीर - आपने बिना दिया मुत, अब भूत फार रही है आपकी....

आरव - चुप, चुप,चुप भाई यहां तो सिरियस हों जा

वो चुप हो गया, मीरा ने धीरे से कहा

मीरा- तुमने सिर्फ पेड़ को disturb नहीं किया तुमने कुछ और भी छेड़ा है

रितिका की आवाज कांप गई

रितिका- मतलब ये सब हमारी गलती है?

आरव ने तुरंत सिर हिलाया

आरव- नहीं गलती नहीं लेकिन अब जिम्मेदारी है इसे ठीक करने की

उसी समय… ऊपर वाले कमरे से हल्की खट… खट… की आवाज आई।

सब एक पल के लिए चुप हो गए निशा ने धीरे से माँ का हाथ पकड़ लिया

निशा- वो फिर आ गया

कबीर - ये छुप छुप के हमारी बातें सुन रहा है

लेकिन इस बार आरव ने ऊपर नहीं देखा उसकी नजर अभी भी रोहित पर थी

आरव- ये तुम्हें क्यों चुन रहा है इसका जवाब अभी पूरा नहीं मिला है

कबीर धीरे से बोला

कबीर- लेकिन एक बात साफ है ये सिर्फ गुस्सा नहीं है ये अपमान का जवाब तो है ही लेकिन इसका मक़सद कुछ और ही लग रहा है

मीरा ने जोड़ा

मीरा - और शायद वो चीज जो वहाँ पड़ी थी वही इसका असली कारण है

आरव ने फैसला ले लिया

आरव- सुबह होते ही हम उस जगह को फिर से देखेंगे इस बार ध्यान से

कबीर हल्का सा मुस्कुराया

कबीर - और इस बार बिना गलती के

ऊपर से फिर वही आवाज आई

खट... खट...

लेकिन इस बार उसमें एक रिदम था जैसे कोई इंतजार कर रहा हो आरव ने पहली बार ऊपर देखा

आरव- ये जल्दी करेगा इससे पहले कि ये पूरी तरह control ले हमें कुछ करना होगा कमरे में फिर खामोशी छा गई

अब ये सिर्फ एक डरावनी घटना नहीं थी ये एक कारण ढूंढने की दौड़ थी और अगर वो कारण समय पर नहीं मिला तो शिकार रोहित खुद होगा।

***** समाप्त *****

sjeet